2 जुलाई 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देशभर में बाल संस्कार शिविरों की धूम

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर मई एवं जून माह में पूरे देशभर में अनेक स्थानों पर ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। सभी स्थानों पर जिनेन्द्र पूजन, प्रवचन, बाल कक्षाएं, जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इन ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के द्वारा हजारों बालकों ने जैनधर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया।

जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सेक्टर-7 में 20वाँ बाल एवं युवा संस्कार शिविर दिनांक 9 से 18 जून तक संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित ज्ञानचंदजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। यह शिविर श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा आयोजित किया गया एवं पण्डित राजेशजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 27 मई से 3 जून 2018 तक 21वें सामूहिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ज्ञान के बीच डालने वाले अध्यापकगण पण्डित प्रियांशजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, कु. अनुभूति जैन, कु. सिद्धि जैन एवं आमंत्रित 35 विद्वानों द्वारा 32 नगरों में तत्त्वज्ञान तथा जैन संस्कार का महत्व समझाकर धर्मप्रभावना का अलौकिक व सराहनीय कार्य किया गया। ट्रस्ट के मंत्री श्री अशोकजी जैन ने शिविर का महत्व व ज्ञानायतन संस्था का परिचय दिया। संस्था के कोषाध्यक्ष श्री जयकुमारजी देवडिया ने आमंत्रित अतिथियों का सम्मान किया। समस्त कार्यक्रम का संचालन पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री ने किया।

शिविर में पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित प्रसन्नजी शेटे एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के संयोजक पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित रोहनजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित वीतरागजी शास्त्री एवं पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री थे। यह शिविर डॉ. राकेशजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल के विशाल भवन में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 13 मई तक नवम् बाल संस्कार शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: जिनेन्द्र-पूजन, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, वर्ग कक्षाएं, सामूहिक कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर द्वारा सामूहिक बालकक्षा, मंगलार्थी अनुभव जैन करेली द्वारा युवावर्ग की कक्षा के अतिरिक्त पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी, ब्र.श्रेणिकजी, पण्डित संतोषजी शास्त्री जबलपुर, श्री संजयजी सिद्धार्थी इन्दौर आदि विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही अनेक शास्त्री विद्वानों और शाश्वत कन्या विद्या निकेतन उदयपुर की बालिकाओं द्वारा बाल कक्षाएं संचालित की गईं। रात्रि में युवा फैडरेशन द्वारा 'गजमोती' नाटक, विरागजी शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा तथा अन्य ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

शिविर में जबलपुर एवं आसपास के अनेक नगरों से लगभग 350 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधना नगर स्थित जिनालय में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 18वाँ जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 13 से 20 मई तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ, पण्डित सौरभजी-गौरवजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री के अतिरिक्त श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, अकलंकदेव महाविद्यालय बांसवाड़ा, धरसेन महाविद्यालय कोटा एवं आत्मार्थी विद्यालय दिल्ली के विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में 1 दिन पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 850 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

- विजय बड़जात्या, इन्दौर

बेगमगंज–रायसेन (म.प्र.) : यहाँ श्री तारण–तरण दिगम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान में श्री तारण–तरण दिगम्बर जैन चैत्यालय एवं श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 8 से 15 मई तक भव्य दिगम्बर जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित भूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

फुटेराकलां–दमोह (म.प्र.) : यहाँ तारण–तरण समाज के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 7 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित वीरअतिशय शास्त्री, पण्डित आप्तजी शास्त्री, पण्डित वर्धमानजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

हिंदवाड़ी–बेलगावी (कर्नाटक) : यहाँ महावीर भवन में दिनांक 21 से 24 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार, पण्डित मिथुनजी शास्त्री मुतनाळ, पण्डित सुधर्मजी शास्त्री मुडलगी द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

उगार–बुद्रुक (कर्नाटक) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 23 से 27 मई तक चतुर्थ धर्मज्ञान संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अमितजी धर्मन्नवर शास्त्री, पण्डित आकाशजी हलाज शास्त्री, पण्डित सिद्धांतजी शेट्टी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 215 बच्चों ने धार्मिक संस्कार ग्रहण किये। शिविर का आयोजन व निर्देशन डॉ. राजेन्द्रजी संगावे ने किया।

कर्रापुर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 1 से 8 मई तक बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत पण्डित प्रतीकजी शास्त्री मौ, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री कर्रापुर एवं पण्डित अनुजजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा बच्चों में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

सिवनी (म.प्र.) : यहाँ नागपुर मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 27 मई से 3 जून तक बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत पण्डित सन्मतिजी शास्त्री एवं पण्डित चेतनजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा बच्चों में धार्मिक संस्कार डाले गये।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 8 जून तक जैनत्व संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित जीवेशजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री गौरझामर, पण्डित विशालजी शास्त्री ग्वालियर एवं पण्डित सजलजी शास्त्री आरोन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ देवनगर स्थित श्री सीमंधर जिनालय में सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 10 से 18 जून तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित मनोजजी, टोडरमल महाविद्यालय के अध्ययनरत छात्र पण्डित सोमिलजी शास्त्री, पण्डित सहजजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित अंकुरजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में 200 से अधिक बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

– श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित चेतनप्रकाशजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी एवं पण्डित सुमितजी शास्त्री सागर द्वारा कक्षाओं के माध्यम से बच्चों में जैनत्व के संस्कार डाले गये।

अकलूज (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर में प्रथम बाल संस्कार शिविर दिनांक 2 से 7 जून तक अनेक कार्यक्रमों सहित संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन ब्र. जितेन्द्रभाई द्वारा आत्मानुशासन पर प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित अमोलजी महाजन, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सागर, पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री, पण्डित चेतनजी दोशी नातेपुते, पण्डित मंथनजी गाला मुम्बई द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा प्रतिदिन जिनधर्म की पौराणिक कथाओं का आयोजन किया गया।

शिविर में लगभग 300 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

बण्डा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 6 से 17 जून तक आवासीय बाल शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी सिद्धार्थी शास्त्री, पण्डित मयंकजी शास्त्री (उपाध्याय वरिष्ठ), पण्डित गौरवजी ध्रुवधाम द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 10 से 18 जून तक श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर में 14वें सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विवेकजी शास्त्री बंडा, पण्डित सजलजी शास्त्री आरोन, पण्डित शुभमजी शास्त्री नंदीश्वर विद्यापीठ, पण्डित सोमिलजी शास्त्री एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त बच्चों को प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षाप्रद कहानियाँ भी सिखाई गई।

हिंगोली (महा.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 6 से 12 जून तक 15वाँ बाल संस्कार शिक्षण शिविर एवं प्रौढ शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

भितरवार–ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ जैन समाज (महावीर जिनालय एवं जिन चैत्यालय) के तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 18 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित संयमजी जैन गुढाचन्द्रजी, पण्डित प्रासुकजी जैन रानीताल, पण्डित नमनजी जैन भरतपुर द्वारा बाल कक्षाएं ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

अशोक नगर (म.प्र.) : यहाँ दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर में वात्सल्य प्रभावना मंडल के तत्त्वावधान में दिनांक 27 मई से 3 जून तक बाल

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

12

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रश्न :– संयोग सात तत्त्वों में कौन सा तत्व है?

उत्तर :– अजीव तत्त्व है। अचेतन संयोग तो अजीव हैं ही, अन्य जीव भी मेरी अपेक्षा अजीव ही हैं; क्योंकि अन्य जीव के ज्ञान व सुख से हम ज्ञानी व सुखी नहीं हो सकते। जैसे दूसरे की आँख से हम देख नहीं सकते, उसीतरह अन्य के ज्ञान से जान नहीं सकते।

प्रश्न :– अचेतन संयोगों में सुख गुण नहीं है, परन्तु चेतन संयोगों में तो सुख गुण है न? फिर उन्हें सुखदायक क्यों नहीं कहा?

उत्तर :– (१) यद्यपि चेतन संयोगों में जो सुख गुण है, परन्तु प्रथम तो उसका हस्तांतरण नहीं हो सकता (२) दूसरे, उसके पास आवश्यकता से अधिक नहीं है, जो दूसरों को दे सके। तथा (३) अपने पास भी वह सुख किसी से कम नहीं है, मात्र पहचानने की देर है। अतः चेतन संयोगों से सुख की अपेक्षा ही नहीं है।

(२) संयोगी भाव के साथ भी उक्त सुखदायक, दुःखदायक आदि पाँच बोल घटित करके उनकी हेयोपादेयता पर विचार करते हैं।

प्रश्न :– संयोगीभाव हेय हैं या उपादेय?

उत्तर :– हेय हैं, क्योंकि दुःखदायक हैं।

प्रश्न :– क्या संयोगीभाव भी संयोगों की तरह अनादि-अनन्त हैं?

उत्तर :– नहीं, ये तो सादि-सान्त हैं, क्योंकि ये परिणमनशील पर्यायें हैं, अभी पैदा हुए हैं और एक क्षण बाद समाप्त होने वाले हैं। हाँ, अनादि सन्तान क्रम से चले आ रहे, इस अपेक्षा से इन्हें अनादि-सान्त भी कह सकते हैं; परन्तु फिर भी चिन्ता की बात नहीं है, क्योंकि जो सादि-सान्त या अनादि-सान्त हैं, वे सब अगले क्षण स्वयं ही नष्ट होनेवाले हैं।

प्रश्न :– पाँच भावों में संयोगीभाव कौनसा भाव है?

उत्तर :– औदयिक भाव हैं, कर्माधीन है, विकारी है।

प्रश्न :– सात तत्त्वों में संयोगीभाव कौन से तत्त्व हैं?

उत्तर :– आस्रव-बन्ध तत्त्व हैं, जो कि दुःख के कारण हैं।

(३) अब 'स्वभाव' नामक बोल पर-सुखदायक, दुःखदायक आदि पाँचों बोलों को घटित करते हैं।

प्रश्न :– स्वभाव सुखदायक हैं या दुःखदायक?

उत्तर :– वैसे तो स्वभाव सदा सुखस्वरूप है, परन्तु उसे सुखदायक भी कहा जा सकता है; क्योंकि स्वभाव के आश्रय से ही पूर्ण सुख की प्राप्ति पर्याय में प्रगट होती है।

प्रश्न :– स्वभाव हेय है या उपादेय?

उत्तर :– उपादेय, क्योंकि स्वभाव के आश्रय से सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न :– स्वभाव सादि-सान्त है या अनादि-अनन्त?

उत्तर :– स्वभाव अनादि-अनन्त है, क्योंकि स्वभाव का कभी अभाव नहीं होता, बदलता नहीं है, सदा एक रूप रहता है।

प्रश्न :– स्वभाव पाँच भावों में कौनसा भाव है?

उत्तर :– स्वभाव पारिणामिकभाव है, निर्विकारी है।

प्रश्न :– स्वभाव सात तत्त्वों में कौन सा तत्त्व है?

उत्तर :– स्वभाव जीवतत्त्व है, अर्थात् यह द्रव्यकर्म, भावकर्म व नोकर्म से भिन्न त्रिकाल शुद्ध, ज्ञानानंदमय, ध्रुव-स्वभावी है। अतः यही एकमात्र सदा ध्यान करने योग्य है।

(४) अब 'स्वभाव के साधन' नामक बोल पर सुख-दायक, दुःखदायक आदि पाँच बोलों को घटित करते हैं।

प्रश्न :– स्वभाव के साधन सुखदायक हैं या दुःखदायक?

उत्तर :– सुखदायक, क्योंकि साधन सदा साध्य के अनुरूप ही होते हैं। जब स्वभाव सुखदायक है तो उसके साधन भी सुखदायक ही होंगे। दुःखदायक साधनों से सुखदायक साध्य की सिद्धि संभव नहीं है। स्वभाव के साधन संवर-निर्जरा तत्त्व हैं, जो प्रगट सुखदायक ही हैं।

(क्रमशः)

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (17)

जब संसार और मोक्ष एक दूसरे से सर्वथा विपरीत हैं तो एक साथ दोनों की साधना कैसे संभव है?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

यद्यपि मोक्ष की साधना करते हुए मुक्ति पथिक एक लम्बेकाल तक संसार में ही बना रह सकता है तथापि ''मोक्ष की प्राप्ति एक मोक्षार्थी का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिये'' यह बात मैं इसलिये कहता हूँ कि **संसार और मोक्ष दोनों एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। सिर्फ भिन्न ही नहीं वरन् एक दूसरे से सर्वथा विपरीत वस्तुएं (जीव की अवस्थाएं) हैं। लक्ष्यपूर्वक एक साथ दोनों की साधना संभव ही नहीं है। हमारा लक्ष्य तो मात्र एक ही हो सकता है – संसार में बने रहना अथवा संसार का त्याग करके मुक्त होना, मोक्ष जाना।**

संसार में बने रहने की साधना करे, निरंतर संसार बढाने के उपक्रम करे और मुक्ति मिल जाये यह कैसे संभव है?

''हमें संसार में ही बने रहना है अथवा मोक्ष जाना है'' इस द्विविधा के साथ संसार में तो रहा जा सकता है, मात्र संसार में ही रहा जा सकता है; क्योंकि द्विविधाग्रस्त लोगों के रहने के लिये यही एकमात्र स्थान है, पर मोक्ष नहीं जाया जा सकता और तो और, मोक्षमार्ग में आगे भी नहीं बढा जा सकता। मोक्षमार्ग में आगे बढने के लिये तो स्पष्ट और दृढनिश्चय ही प्रथम शर्त है।

एक बात और! हमारे मोक्षार्थी (मोक्षमार्गी) बनते ही तुरंत तो हमारा संसार छूट नहीं जायेगा, इसमें कुछ समय तो लगेगा ही। वह समय कोई एक-दो वर्ष नहीं, मात्र एक-दो भव भी नहीं, अर्धपुद्गल परावर्तन का लम्बा समय भी हो सकता है; पर **मोक्ष की ओर हमारे प्रस्थान के दौरान हम संसार में बने रहते हुए भी संसार के लिये बाहरी व्यक्ति बन जायेंगे; क्योंकि अब हम संसार के प्रति निष्ठावान नहीं रहे।** जैसे हम भारतीय हैं और भारतीय रहते हुए यदि हम किसी दूसरे देश में जा बसें और जीवनभर वहीं रहें तब भी हम वहाँ रहते हुए भी भारतीय ही बने रहते हैं, क्यों?

क्योंकि हमारी निष्ठा भारत के प्रति ही बनी रहती है, उस देश के प्रति नहीं हो पाती है, जहाँ हम रह रहे हैं।

मैंने स्वयं ऐसे हजारों लोगों को देखा है जो कई पीढियों से अपना गाँव/शहर छोड़कर मुम्बई में जा बसे हैं, उनकी नई पीढियाँ तो मुम्बई में ही जन्मी, पली और बढी हैं; पर मुम्बई अभी भी उनके लिये परदेश ही बना हुआ है, साल दो साल में एकाध बार जब वे एक-दो दिन के लिये मुम्बई छोड़कर अपने गाँव जाते हैं तो कहते हैं कि 'देश में जा रहा हूँ'।

वे जाते तो दो दिन के लिये हैं; पर गाते छह महीने तक हैं, जाने से पहले और लौटने के बाद भी, यथा – ''छह महीने बाद मैं अपने देश में जाऊँगा....दो महीने पहले मैं देश में जाकर आया, बहुत मजा आया'' इत्यादि। अपने गाँव-नगर (देश) के प्रति ललक तो उनके चित्त में (अवचेतन मन में) निरंतर ही बनी रहती है।

हमारी उक्त वृत्ति (परिणति) का ही परिणाम है कि सारा जीवन वहीं गुजार देने के बावजूद वहाँ के स्थानीय लोग भी हमें परदेशी ही मानते रहते हैं और मौके-बेमौके हमें वहाँ से मार-भगाने, निकाल देने के मंसूबे बांधते रहते हैं, चर्चा करते हैं और अभियान (आन्दोलन) तक चलाते हैं। ठीक भी तो है, परदेशियों को भला कौन अपने यहाँ रखना चाहेगा?

बस! ठीक इसी प्रकार सच्चे मोक्षार्थी, मुक्तिमार्ग के पथिक, आत्मार्थी साधकों के लिये यह संसार परदेश ही है। यहाँ रहते हुए भी उनकी धुन सदा मोक्ष में ही रमी रहती है, वे सदा उसी की चर्चा-वार्ता करते रहते हैं, अपने जैसे ही अन्य लोगों की ही संगति करते हैं, मोक्ष के ही गीत गाते रहते हैं, ऐसे में संसारी जीव उन्हें अपना कैसे मान सकते हैं, उन्हें कैसे अपना सकते हैं और वे भी कब तक संसार में टिक सकते हैं? वे संसार में रहने के लायक नहीं। एक न एक दिन उन्हें संसार त्यागना ही होगा, उन्हें तो मोक्ष जाना ही होगा।

गुजरातियों के बारे में गुजरातियों के बीच एक कहावत मशहूर है कि ''जहाँ बसे एक गुजराती वहाँ बसे गुजरात''।

क्यों? क्योंकि गुजराती कहीं भी जाये, कहीं भी रहे पर अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपने संस्कार, अपना खानपान नहीं बदलता है। वह धीरे-धीरे अपने भाई-बन्धुओं को भी वहाँ ले आता है और अपनी आवश्यकता की वस्तुएं जुटा लेता है, उसके इर्दगिर्द एक नन्हा सा गुजरात निर्मित हो ही जाता है। ऐसा करने से उन्हें परदेश में रहते हुए भी अपने देश का विरह सताता नहीं है।

ठीक इसी प्रकार एक **मुक्ति का साधक मुमुक्षु, एक मोक्षमार्गी जहाँ रहता है, अपने इर्दगिर्द अपने जैसी रुचि, संस्कार और लक्ष्यों वाले व्यक्तियों का समूह जुटा लेता है। यही करना योग्य भी है,** क्योंकि ऐसे में उसे यह संसार स्पर्श नहीं करता है, उसे अन्य संसारीजनों के सम्पर्क में आने की आवश्यकता नहीं रहती है, वह संपर्कजनित विकृतियों से बचा रहता है, वह निर्बाध अपनी साधना में मगन बना रह सकता है।

ऐसे में **यदि अन्य संसारी जीव तुझे अपना न मानें, तुझे अस्वीकार करें, तेरी अवहेलना करें, बहिष्कार करें तो उनका क्या अपराध है? क्या तू इसी योग्य नहीं है, क्या तुझे भी यही अभीष्ट नहीं है?**

तू स्वयं संसार का त्याग करना चाहता है और वे संसार से (सांसारिक जीवन से) तेरा बहिष्कार करते हैं तो क्या वे तेरा ही समर्थन

और सहयोग नहीं करते हैं?

यह सत्य है कि **मुक्ति के साधकों की संगति संसारी जीवों के कल्याण में निमित्त होती है पर साधकों के लिये तो यह उनकी साधना में बाधक ही है। साधकों के लिये तो उनसे एक सुरक्षित दूरी बनाये रखना ही उत्तम है।**

मुमुक्षु होना और मोक्षमार्ग पर आगे बढना कोई अनायास ही घट जाने वाली घटना नहीं है। इसकी एक सुनिश्चित विधि और क्रमिक प्रक्रिया है। वह विधि और प्रक्रिया क्या है यह जानने के लिये पढें इस शृंखला की अगली कड़ी। **(क्रमशः)**

शोक समाचार

(1) कोटा (राज.) निवासी श्री उत्तमचंदजी बज (निर्खी) सुपुत्र स्व. श्री सुगनचंदजी बज का दिनांक 16 जून को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/– रुपये प्राप्त हुये।

(2) बड़ोदरा (गुज.) निवासी श्री रमेशचंद सी. शाह का दिनांक 19 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया।

(3) उदयपुर (राज.) निवासी श्री मांगीलालजी जसावत का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने साकरोदा में अपने वर्षों तक दोनों समय प्रवचन कर अनेक साधर्मीजनों को तत्त्वज्ञान का लाभ प्रदान किया। इस अवसर पर 12 दिनों तक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा बारह भावना पर प्रवचनों का लाभ मिला। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 5000/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई–मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **– महामंत्री**

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, मो. 9785643202 (पीयूष जैन) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
12 से 21 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
6 से 13 सितम्बर	अध्यात्म स्टडी सर्किल मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
14 से 25 सितम्बर	बेलगांव (कर्ना.)	दशलक्षण महापर्व
5 से 12 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर

(पृष्ठ 2 का शेष...)

संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राहुलजी शास्त्री अशोकनगर, पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित रजतजी शास्त्री, पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा बालकों में जैनधर्म के संस्कार डाले गये।

कैराना (उ.प्र.) : यहाँ विश्वासनगर–दिल्ली से संचालित बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत दिनांक 27 मई से 3 जून तक पण्डित पीयूषजी शास्त्री टडा द्वारा बालकों की कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई से 6 जून तक बाल एवं युवा संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पूजा छाबड़ा इन्दौर, समता झांझरी उज्जैन, सारिका छाबड़ा इन्दौर, दिव्या पाटनी इन्दौर, एकता दीदी छिन्दवाड़ा, सहजता दीदी छिन्दवाड़ा, रानी दीदी खनियांधाना, प्रियंका दीदी अमायन एवं निधि दीदी भोपाल द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

करहल (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 10 से 18 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें पण्डित रजतजी शास्त्री काप्रेन, पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री लुकवासा, पण्डित निष्कर्षजी शास्त्री नौगांव द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

इसप्रकार देशभर में अनेक स्थानों पर बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। ●

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण–पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

● अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें। संपर्क सूत्र – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.– 0141–2705581, 2707458, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

... तथा राग–द्वेष–मोहरूप जो आस्रव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्य क्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है, सो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता।

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 227

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

16

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सत्यवादी हरिश्चन्द्र नाटक देखकर भीड़ बाहर आ रही थी। एक पत्रकार ने एक पगड़ीधारी सेठजी से पूँछा –

''कैसा लगा नाटक? आपने क्या सीखा इससे?''

सेठजी ने अत्यन्त उपेक्षा भाव से कहा –

''सत्य बोलवा में कांई माल (लाभ) नथी। यदि महाराजा हरिश्चन्द्र जैसा सब कुछ गंवाकर दर-दर की ठोकर खाना हो तो सत्य बोलना।''

जब भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने यह नाटक लिखा होगा; तब उन्होंने सोचा भी न होगा कि कोई इस नाटक से ऐसी शिक्षा भी ले सकता है।

इसीप्रकार जब उक्त कवि ने यह छन्द लिखे होंगे, तब उन्होंने सोचा भी न होगा कि इससे ऐसा भी हो सकता है कि लोग सल्लेखना ग्रहण करने से डरने लगेंगे, कतराने लगेंगे।

सल्लेखना के समय न भय का वातावरण होना चाहिये, न आतंक का; न हंसी-खुशी का, न रंज का; एकदम शान्त वातावरण होना चाहिये।

'एकदम शान्त वातावरण क्या होता है' – हम तो यह भी नहीं जानते।

रोने-धोने के वातावरण को तो शान्त कहते ही नहीं; हंसी-खुशी के वातावरण को भी शान्त वातावरण नहीं कहते। जिसमें न रोना-धोना हो और न हंसी-खुशी; क्योंकि ये दोनों कषायरूप हैं, शान्तिरूप नहीं, समताभावरूप नहीं। एकदम समता हो, शान्ति हो। ऐसा वातावरण चाहिये।

अरे, भाई! जिनका अनादि-अनन्त आत्मा में अपनापन है; उनके लिये इन बाह्य क्षणिक संयोगों का वियोग क्या महत्व रखता है। अतः संयोगों के वियोग रूप मरण उन पर क्या प्रभाव डाल सकता है।

सम्यग्दृष्टी सल्लेखनाधारियों को भी यदि संयोगों में चारित्रमोहजन्य थोड़ा बहुत आकर्षण हो तो भी वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि **यदि ये संयोग जायेंगे तो अगले भव में इनसे कई गुने अच्छे संयोग उन्हें सहज ही प्राप्त होंगे; पर बात तो यह है कि ज्ञानियों को संयोगों में रस ही नहीं है।**

एक भाई ने मुझसे पूछा –

''क्या हो रहा है?''

मैंने कहा – ''सल्लेखना की तैयारी।''

एकदम घबड़ाते हुये वे बोले –

''क्या कहा, सल्लेखना की तैयारी। क्यों क्या हो गया?''

मैंने कहा – ''कुछ नहीं।''

वे बोले– ''कुछ नहीं तो सल्लेखना की तैयारी क्यों?''

मैं सल्लेखना पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ; अतः उसमें व्यस्त हूँ। मुझसे प्रायः लोग लेखन के बारे में ही पूँछते हैं; अतः मैंने यही समझा कि यह भी लेखन के बारे में ही पूँछ रहे हैं; पर वे कुछ और ही समझ गये।

वे कहने लगे – ''मैं तो डर गया था कि ऐसा क्या हो गया कि आप सल्लेखना की तैयारी करने लगे?''

क्या सल्लेखना की तैयारी के लिये कुछ होना जरूरी है? क्या स्वस्थ रहते हुये सल्लेखना की तैयारी नहीं की जा सकती?

अरे, भाई! सल्लेखना की तैयारी तो स्वस्थ अवस्था में ही होती है। मरण सम्मुख होने पर तो सल्लेखना ली जाती है। मरणसम्मुख होने पर तैयारी को समय ही कहाँ मिलता है?

हमें अपना जीवन समाधिमय बनाना है। ज्ञानियों का जीवन समाधिमय ही होता है, समाधिमय ही होना चाहिये।

जब जीवन समतामय होगा, समाधिमय होगा तो मरण भी सहज समाधिमय होगा।

मनुष्य मरते हैं और आत्मा अमर हैं। अब हमें यह निर्णय करना है कि हम मनुष्य हैं या आत्मा? हमारा अपनापन मरणशील मनुष्य पर्याय में है या अमर आत्मा में?

यह मनुष्य पर्याय तो कुछ दिनों की है। दो दिन आगे या दो दिन पीछे, आखिर तो इस मनुष्य पर्याय का अन्त होना ही है।

एक तो यह आत्मा अनादि से है और अनन्त काल तक रहेगा। अतः इसका अन्त कभी नहीं होता। सदा साथ रहनेवाला यह अनादि-अनन्त आत्मा मैं स्वयं हूँ।

यदि किसी अपेक्षा असमान जातीय मनुष्य पर्याय को भी अपना कहें तो इसमें अनन्त पुद्गल परमाणु अजीव द्रव्य हैं और एक आत्मा जीव द्रव्य है। तात्पर्य यह है कि अनन्त द्रव्यों की पिण्ड रूप असमान जातीय मनुष्य पर्याय में मेरा (आत्मा का) हिस्सा अनन्तवाँ भाग ही है।

इस असमानजातीयमनुष्यपर्याय में से अनन्त परमाणुओं का बिखर जाना और आत्मा का पृथक् हो जाना ही मरण है।

मरण में बिखरे तो वे पौद्गलिक परमाणुओं के शरीररूप स्कन्ध ही है। मैं तो अभी भी वैसा ही हूँ, जैसा पहले था। मेरा क्या होना था?

समाधिमरण की असली तैयारी तो उस भगवान आत्मा की अमरता का चिन्तन-मनन है; जो मैं स्वयं हूँ। आत्मा के असंख्य प्रदेश और अनन्त गुण तो कभी बिखरते ही नहीं। रही पर्याय के बदलने की बात। सो पर्याय का तो स्वभाव ही बदलना है। यदि वह बदले नहीं तो पर्याय ही नहीं हो सकती; क्योंकि बदलना ही उसका जीवन है।

बहते जल का नाम ही नदी है। यदि जल का बहना बन्द हो जाय तो फिर वह नदी नहीं रहेगी; और चाहे जो कुछ हो, पर नदी नहीं रह सकती। सागर हो, तालाब हो, झील हो, कुआँ-बावड़ी हो; कुछ भी हो, पर नदी नहीं।

इसीप्रकार यदि बदले नहीं तो वह पर्याय नहीं हो सकती। और चाहे जो कुछ भी हो, पर पर्याय नहीं हो सकती; क्योंकि पलटने का नाम ही पर्याय है, परिवर्तनशील होना पर्याय का धर्म है; अतः पर्याय में तो परिवर्तन होगा ही। यह मनुष्यपर्याय भी पर्याय है; अतः यह तो पलटेगी ही। इसको पलटने से रोकना संभव नहीं है।

यदि दुखरूप पर्याय पलटेगी नहीं तो सुखरूप पर्याय कैसे आयेगी? यदि मोक्षपर्याय को आना है तो संसार पर्याय तो पलटना ही होगा, जाना ही होगा, नष्ट होना ही होगा।

मृत्यु भी पर्याय का पलटना ही है। इस पलटन को सहज भाव से स्वीकार करना ही सल्लेखना है, समाधिमरण है, संथारा है; जो जीवन के अन्त समय में अनिवार्य है, अति आवश्यक है। ●

अखिल बंसल छत्रसाल पुरस्कार से सम्मानित

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ विज्ञान भवन में अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् के तत्त्वावधान में कैलाश मडवैया के 75वें हीरक जयंती समारोह पर आयोजित कार्यक्रम में मध्यप्रदेश की महामहिम राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल के करकमलों से दैनिक भास्कर द्वारा प्रदत्त 'छत्रसाल राष्ट्रीय पुरस्कार' जर्नलिस्ट अखिल बंसल, जयपुर (सम्पादक-समन्वय वाणी) को उनकी कृति 'क्रांतिवीर मर्दनसिंह' के लिये प्रदान किया गया। महामहिम राज्यपाल ने शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र, साहित्य एवं नगद राशि प्रदानकर श्री बंसल को सम्मानित किया।

इस अवसर पर उपस्थित साहित्यकारों के साथ-साथ अनेक समाचार पत्रों के सम्पादक महानुभावों ने भी आपको बधाई दी।

ज्ञातव्य है कि 2009 में आपको अ.भा.दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् द्वारा कैलाशचंद शास्त्री पुरस्कार, 2011 में अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा पारसदास अनिलकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार, 2014 में मा. कौशलजी के सान्निध्य में दिग. जैन तीर्थ ऋषभांचल द्वारा ऋषभदेव पुरस्कार तथा 2014 में ही ए.वी.एस. फाउन्डेशन द्वारा वाग्मिता पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है। **- अंशुल जैन**

हार्दिक बधाई!

(1) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक (बैच-1986) **श्री कैलाशचंदजी जैन बीकानेर** (प्रधानाचार्य-खिंयारा) को **सहायक निदेशक प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर** बनने पर हार्दिक बधाई। ज्ञातव्य है कि आप शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर सम्मानित होते रहे हैं; जिला कलेक्टर स्तर पर 2 बार, तहसील स्तर पर 2 बार, एस.डी.एम., उपनिदेशक, ग्राम पंचायत आदि द्वारा सम्मानित हो चुके हैं।

(2) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक **वीरचंदजी शास्त्री** को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने यह शोध-प्रबन्ध '**आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती के ग्रंथों में कर्म चिंतन : विश्लेषणात्मक अध्ययन**' विषय पर प्रो. जिनेन्द्रजी जैन के निर्देशन में पूर्ण किया।

(3) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक **संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा** का राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित स्कूल व्याख्याता परीक्षा-2015 में अंग्रेजी व्याख्याता के पद पर चयन हुआ है। इसके तीन माह पूर्व ही वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा में भी अंग्रेजी अध्यापक के रूप में चयन हुआ था।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

श्रुतपंचमी पर्व मनाया

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 18 जून को प्रात: वीतराग-विज्ञान महिला मंडल एवं अन्य साधर्मियों द्वारा शास्त्रों को लेकर जुलूस निकाला गया। तत्पश्चात् प्रक्षाल व श्रुतपंचमी पूजन का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का श्रुतपंचमी पर विशेष सी.डी प्रवचन भी हुआ। **– जिनकुमार शास्त्री**

(2) जयपुर (राज.) : यहाँ आदर्श नगर स्थित मुल्तान दिगम्बर जैन मंदिर में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा श्रुतपंचमी के अवसर पर सूत्रपाहुड के आधार पर श्रुत के स्वाध्याय की महत्ता व आवश्यकता समझायी गयी। प्रवचन के पश्चात् मंदिर परिसर में जिनवाणी शोभायात्रा भी निकाली गई।

(3) दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में श्रुतपंचमी के अवसर पर विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली थे।

इस अवसर पर पण्डित संयमजी शास्त्री, पण्डित अमनजी शास्त्री, पण्डित चर्चितजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, वाणी जैन आदि वक्ताओं ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 12 अगस्त से मंगलवार 21 अगस्त, 2018 तक)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का **41वाँ शिक्षण शिविर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 12 अगस्त से 21 अगस्त, 2018** तक लगने जा रहा है।

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

संपर्क सूत्र – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें –
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें –
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com